भक्त हृदय के उद्‌गार..

करुणानिधे बिन करुणा के, किसने तुमको पाया है।
वही पाये हे राम तुझे, जिसको तूने बुलाया है।।

ज्ञान ध्यान सों तू है परे, हर दृश्य सों तू विलक्षण है।
पर जानने से यह क्या होगा, मेरे मन में तो तू हर क्षण है।।

प्रकाश स्वरूप है तू पिया, इस हृदय में है वास तेरा।
प्रेम करन मैं कहाँ जाऊँ, जब यहीं पे है निवास तेरा।।

अंधियारा क्यों छाया है, मैं क्यों अब भरमाया है।
आज तेरे चरण में बैठ के, यह मैं क्यों बहु घबराया है।।

- **परम पूज्य माँ**
श्रीमद्भगवद्गीता, 1/ 32
तृतीय अध्ययन, 20.4.1960

अनुक्रमणिका

1. **भक्त हृदय के उद्‌गार..**
   अनमोल राम बेमोल बिके

3. **सत्य की जो राह दिखाई, सब को आलिंगन में समा लिया..**

4. **तन जो भी करे, उसमें कर्तापन का भाव न आने दें..!**
   अर्पणा प्रकाशन - श्रीमद्भगवद्गीता - 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' 3/30-33

10. **कर्तृत्व भाव जन्म**
    परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

15. **जीवन में गायत्री दर्शन!**
    डॉ. जे.के. महता

18. **मिटकर ही रे जान ले, अखण्ड तत्व इक वह ही है..!**
    मुण्डकोपनिषद्, द्वितीय मुण्डक 2/11

21. **..जो गंगे ने हमें दिया, हमें सीस झुकाना ही होगा!**
    अर्पणा प्रकाशन - 'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद'

26. **कैसी अनुभूति है यह.. जिसे ज़ुबां ब्यां कर ही नहीं पाती!**
    श्रीमती पम्मी महता

29. **तनो जन्म**
    विष्णु प्रिया महता

37. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल, 132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा अगस्त 2025 को प्रकाशित

सत्य की जो राह दिखाई,
सब को आलिंगन में समा लिया..

प्रेम की प्रतिमा, दया का सागर, हे माँ तू है दिव्य प्रकाश!
चरणों में मिलता है तेरे, हर शिशु को परम विश्रास।।

एक सत्य की राह दिखाई, सब को आलिंगन में समा लिया।
वेद, बाइबिल, सम्पूर्ण ग्रंथों को, जीवन में प्रतिबिंबित किया।।

शब्दों में प्रेम की मधुरिमा, दृष्टि में समत्व की गहरायी थी।
मौन में भी उपदेश छुपा था, हर की पीड़ा हृदय में समायी थी।।

नयनों से छलकती करुणा थी, अद्वैत की तू परिभाषा थी।
जहाँ अंधकार था छाया होता, माँ वहीं तू ज्योत जलाती थी।।

भक्ति में शक्ति, सेवा में मुक्ति, यही राह माँ तू ने सिखाई थी।
प्रेम ही सब से ऊँचा साधन, यही निज उपमा से दिखलाई थी।।

माँ की मुस्कान थी जीवन दायिनी, स्पर्श था जैसे वरदान।
जड़ चेतन सब जीवित हो उठते, जब 'उर्वशी' का होता गान।।

संसार की राहों में जब जब, अज्ञान के बादल छा जाते।
सत्य की रश्मि बनकर माँ, तब जीवन ज्योत जला जाते।।

उन्होंने जो प्रेम बाँटा है, युगों युगों तक गूँजेगा।
उनका आभास अमर रहेगा, हृदय आकाश में गूँजेगा।।

हे परम गुरु, हे करुणामयी माँ, तुम्हें नमन हो बारम्बार।
चरणों में माटी बन बिछ जाएँ, यही प्रार्थना कर स्वीकार।। ❖

तन जो भी करे, उसमें कर्तापन का भाव न आने दें..

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः।।

श्रीमद्भगवद्गीता- 3/30

भगवान कहते हैं, इसलिये हे अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. तू अध्यात्म में निष्ठावान होकर,
२. सम्पूर्ण कर्मों को मुझ पर समर्पण करके,
३. आशा ममता रहित होकर, युद्ध कर।

तत्व विस्तार :

नन्हीं! "अध्यात्म में निष्ठावान होकर युद्ध कर" यह भगवान ने कहा! पहले अध्यात्म का अर्थ समझ ले!

अध्यात्म :

1. अध्यात्म ब्रह्म का स्वभाव है।
2. अध्यात्म आत्मा का स्वभाव है।
3. परम के स्वभाव के ज्ञान में निष्ठा ही अध्यात्म है।
4. जीवन में परम तत्व का विवेक लाने को ही अध्यात्म कहते हैं।
5. सत्त्व ज्ञान को विज्ञान में परिणत करने की विधि को अध्यात्म कहते हैं।
6. आत्म अनुभव को अध्यात्म कहते हैं।

भगवान कहते हैं, हे अर्जुन!

क) तू आत्म स्वरूप है, तू आत्मा में ही स्थित हो जा।
ख) तू अविनाशी है, तू अक्षर है, इस सत्त्व का रहस्य जान ले।

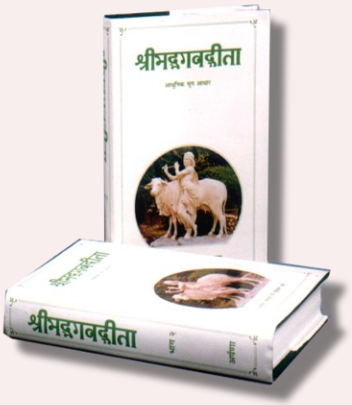

ग) तू गुणातीत, विकार रहित है, इसका तत्व सार जान ले।
घ) तू मृत्युधर्मा तन है ही नहीं, सो तू मृत्यु की परवाह न कर।
ङ) ये प्राकृतिक देन, ये तनोगुण तेरे नहीं, तू इनसे संग छोड़ दे।
च) तू प्रकृति रचित जग के गुणों का पति नहीं, तो उनसे क्यों लड़ता रहता है?

गुणों से प्रेरित हुए कर्मों को तू अपना नहीं, उनको मुझ पर ही छोड़ दे। गुण तो स्वतः ही काज कर्म करते जायेंगे, इनसे तुम्हारा संग व्यर्थ है, तू संग छोड़ दे। यह जो लोग तुम्हारे सामने खड़े हैं, यह भी अपने गुणों से बन्धे हुए ही आज अधर्म का साथ दे रहे हैं। असुरत्व की ओर आकर्षित करने वाले आसुरी गुण तथा तुम्हारे देवत्व को स्थापित करने वाले दैवी गुण, विरोधी गुण हैं। जब अति हो जाये, तो इनका

युद्ध तो होता ही है। इस कारण इन स्वतः सिद्ध गुणों से तू विचलित न हो और युद्ध कर।

यानि भगवान कहते हैं,

1. गुण तो तुम्हारे हैं ही नहीं, इनसे संग छोड़ दे। गुण भिड़ाव का जो परिणाम होगा, सो होगा ही, तू नाहक फल की आशा छोड़ दे।
2. जब तन ही तुम्हारा नहीं और सम्मुख खड़े योद्धाओं का तन भी इनका नहीं, फिर युद्ध के परिणाम में किसको क्या मिला, इस पर से ध्यान उठा ले।
3. फिर, जड़ गुणों से आशा क्या करनी? वह तो प्रकृति के अधीन अपने काज, अन्धों की तरह करते जायेंगे।
4. जय पराजय भी तो गुणों पर ही आधारित है।
5. अपने आपको नाहक आशा पाश में बाँध कर, तू केवल दुःखी सुखी ही तो होगा। क्यों व्यर्थ में अपने आपको चलायमान करते हो?

फिर भगवान ने कहा :

क) ममत्व भाव छोड़ दे और युद्ध कर।

ख) यानि, अपने तन को भी अपने अधिकार में मत समझ क्योंकि वह तुम्हारा है ही नहीं।

ग) अपने गुणों को भी अपने अधिकार में मत समझ क्योंकि वह तुम्हारे बस में ही नहीं हैं।

घ) अपनी शक्तियों को भी अपनी न समझ, वह भी गुणों की ही देन हैं और प्राकृतिक रचना हैं।

ङ) अपनी बुद्धि तथा मन से भी ममत्व भाव छोड़ दे, वह भी तुम्हारे अधिकार में नहीं है।

च) औरों पर अपना अधिकार समझना तो दूर रहा, तुम्हारा तो अपने पर भी अपना अधिकार नहीं।

भगवान कहते हैं, "इसलिये तू ज्वर से रहित हो जा।"

ज्वर :

1. ज्वर रोग को कहते हैं।
2. ज्वर स्वास्थ्य का हरण करता है।
3. ज्वर तन को मिटाने तथा निर्बल बनाने वाले कीटाणुओं के संग्रह से उत्पन्न होता है।
4. दुःख-दर्द, शोक इत्यादि क्षोभ मानसिक ज्वर होते हैं, जो मानसिक शक्तियों को क्षीण करते हैं।
5. तनत्व भाव, कर्तृत्व भाव तथा मोह रूपा कीटाणु जब जीव को ग्रस लेते हैं तो वह अपने स्वरूप से ही वंचित हो जाता है।
6. तब वह स्वस्थ नहीं रहता; अर्थात् 'अपने में स्थित' नहीं रहता।
7. वह अपने स्वरूप में स्थित नहीं रहता। वह स्वरूप स्थित की नित्य स्वतंत्रता को खो देता है; नित्य आनन्दमय, निर्विकार, तथा निर्द्वन्द्व स्थिति को खो देता है।
8. वह अपनी तृप्ति को खो देता है।

भगवान यहाँ कह रहे हैं, "तू ज्वर रहित हो जा।"

नन्हीं! इसको भी समझ ले कि यह कह कर भगवान ने अर्जुन पर अपार कृपा करी और कहा :

क) 'माना तू अभी आत्मवान नहीं हुआ,
चल तू मेरा एतबार कर ले!

ख) अर्जुन! तू मेरी बात मान ले; मेरी बुद्धि की बात मान ले।

ग) चल! तू मुझ पर ही सब कुछ छोड़ दे।'

यह सब कह कर, अर्जुन को मना रहे हैं, साक्षात् भगवान!

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।।

श्रीमद्भगवद्गीता- 3/31

देख नन्हीं! भगवान स्पष्ट कह रहे हैं :

शब्दार्थ :

१. जो कोई पुरुष भी,
२. दोष बुद्धि से रहित हुआ और श्रद्धा से युक्त हुआ
३. सदा मेरे इस मत के अनुसार चलेगा,
४. वह सम्पूर्ण कर्मों से छूट जायेगा।

तत्व विस्तार :

नन्हीं! पहले पुनः समझ ले कि भगवान ने क्या कहा है-

1. तू आत्मा है।
2. तू मृत्युधर्मा तन नहीं।
3. हर कर्म गुणों का खिलवाड़ है।
4. तुम्हारा तन भी गुणों से बधित है और दूसरे का तन भी गुण बधित है।
5. किसी को बुरा भला मत कहो।
6. निष्काम भाव से निरासक्त हुए साधारण जीवन में कर्म करते जाओ।

अब भगवान कहते हैं, 'जो भी पुरुष मेरी इस कथनी को मान लेगा, वह कर्मों से छूट जायेगा।' उन्होंने कहा, 'दोष दृष्टि रहित हुआ और श्रद्धा से युक्त हुआ जो मेरा मत मानेगा, वह कर्मों से मुक्त हो जायेगा।'

प्रथम दोष दृष्टि को समझ ले। भगवान ने कहा है, यदि तू इसे बिना दोष दृष्टि के सत्य मान लेगा, तभी तो तेरा लक्ष्य सिद्ध होगा।

दोष दृष्टि :

1. दोष दृष्टि वाले को दूसरे की कथनी में त्रुटियाँ दिखती हैं।
2. अवगुण दर्शी बुद्धि को दोष दृष्टि पूर्ण कहते हैं।
3. दोष दृष्टि, न्यूनता आरोपित करने वाली दृष्टि है।
4. निन्दक की दृष्टि दोष पूर्ण है।
5. जो केवल दूसरे को ग़लत ठहराना चाहे तथा जो मिथ्या सिद्धान्तों का आसरा लेकर सत्यता न समझ सके, उसकी दृष्टि दोष पूर्ण है।
6. तर्क वितर्क करके जो नित्य अपनी मान्यता को ही सत् सिद्ध करना चाहे, उसकी दृष्टि दोष पूर्ण है।

नन्हीं! यह दोष दृष्टि बड़े बड़े बुद्धिमानों को भी सत् पथ से गिरा देती है।

क) जो वह स्वयं नहीं कर सकते और नहीं करना चाहते, उसे वह दूषित पथ ही कह देते हैं।

ख) फिर, जीव तो अपनी मान्यताओं से भरा हुआ होता है। उसकी दृष्टि उसकी अपनी ही मान्यताओं द्वारा आवृत होकर, दूषित हो जाती है।

ग) हर प्राणी को मौन में अपना अनुभव होता है। वह अपने आंतरिक विकार ही दूसरे में देखता है। जीव के अपने दुर्गुण ही उसकी दृष्टि को दूषित कर देते हैं।

घ) उस दोष दृष्टि के कारण ही तो जीव दूसरे की महानता नहीं देख सकता। जो दोष दृष्टि से रहित होगा, वह भगवान के इस कहने को अक्षरांश मान ही लेगा कि, 'तुम तन नहीं हो, आत्मा हो' और 'तुम आत्मवान बनो'।

अब साधारण जीव के लिये यह बात मान लेनी कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इसे तो वही मानेगा जो :

1. कृष्ण को सच ही भगवान मानेगा।
2. कृष्ण को सत् स्वरूप मानेगा।
3. भगवान कृष्ण के जीवन को ज्ञान का विज्ञानमय रूप मानेगा।
4. भगवान कृष्ण को अध्यात्म का प्रकाश रूप मानेगा।

कोई ऐसा विरला मनुष्य ही होगा जो 'आत्मवान' तथा 'ब्राह्मी स्थिति' को ही अपना लक्ष्य बना लेगा। तत्पश्चात्, श्रद्धा का होना अनिवार्य है।

निर्दोष बुद्धि को लक्ष्य तो बना लिया, अब जीवन के भवसागर को कैसे तरें और कैसे उससे पार होयें? तनत्व भाव अभाव का जीवन में अभ्यास और भी मुश्किल है।

'मैं आत्मा हूँ' कह कर,

क) जंगलों में चले जाना,

ख) अपने कर्तव्यों का परित्याग कर देना,

ग) लोगों से दूर हो जाना,

आसान है; किन्तु भगवान कहते हैं, 'तू आत्मा है, तू तन नहीं! तन के प्रति जो तेरा ममत्व भाव है, उसे छोड़ दे और तन दूसरों को दे दे, इससे निरासक्त हुआ इस तन को निष्काम कर्म करने दे।

नन्हीं! इस बात को निभाना बहुत कठिन है। लोग ग़लती भी यहीं कर देते हैं। आत्मा परमात्मा की बातें उन्हें अच्छी लगती हैं, जीवन में लोगों को तन दे देना उन्हें बुरा लगता है। लोगों के सपने पूरे करोगे तब ही तो निष्काम भाव से कर्म करने आयेंगे और निरासक्ति का अभ्यास कर सकोगे! किन्तु मन कहता है, 'हम तो आत्मवान बनने चले हैं, किसी के नौकर बनने तो नहीं!' इसी कारण नन्हीं! तनत्व भाव का त्याग नहीं हो सकता। तनत्व भाव त्याग के लिये श्रद्धा चाहिये। अब श्रद्धा को भी समझ ले।

श्रद्धा :

1. श्रद्धा भगवान के आदेश पर विश्वास को कहते हैं।
2. भगवान के गुणों पर विश्वास श्रद्धा है।
3. हमारा स्थूल विषयों में विश्वास होता है। दैवी गुणों में गर विश्वास हो तो उसे श्रद्धा कहते हैं।
4. श्रद्धा उस गुण में होती है, जिसका दृष्ट रूप या फल नहीं होता। जिसने अपने

तनत्व भाव का त्याग करना है, उसको परम गुण में साधारण ही नहीं, दिव्य तथा अलौकिक श्रद्धा की आवश्यकता होती है।

क) उसने तो जीवन भर निष्काम कर्म करने का व्रत लिया है।
ख) उसने तो सदा अपने आपको भूले रहने का व्रत लिया है।
ग) उसने तो हमेशा दूसरों को स्थापित करने का व्रत लेना है।
घ) उसने निरासक्त रहने का व्रत लेना है।
ङ) उसने तो अपनी रुचि अरुचि के प्रति उदासीन रहने का व्रत लेना है।
च) उसने तो अपने मान या अपमान के प्रति उदासीन रहने का व्रत लेना है।

इस व्रत का पालन करते समय, संसार में कौन सी समस्यायें उठ आयें, कैसी वातावरण रूपा ऋतुओं का सामना करना पड़ जाये, राह में किन चाहनाओं के तूफ़ान आ जायें, व्रती इन सब की परवाह नहीं करता। नन्हीं! इस भवसागर से तरने के लिये नाम रूपा लक्ष्य ही नैया है और श्रद्धा रूपा चप्पू ही इससे पार लगा सकते हैं।

इस कारण भगवान कहते हैं, 'दोष रहित होकर, तथा श्रद्धा से युक्त होकर जो भी मनुष्य मेरे मत को मानेगा, वह कर्मों से छूट जायेगा।' यानि, वह कर्मफल चक्र से ही छूट जायेगा।

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः।।

श्रीमद्भगवद्गीता- 3/32

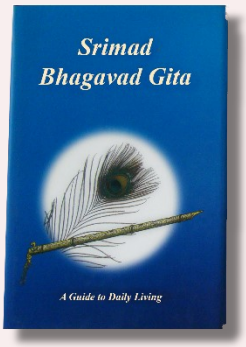

देख नन्हीं! भगवान क्या कह रहे हैं :

शब्दार्थ :

१. जो दोष दृष्टि पूर्ण लोग मेरे इस मत को धारण नहीं करते,
२. उन्हें सर्व ज्ञान पूर्ण विमूढ़ गण,
३. तथा नष्ट हुए लोग जान।

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं! भगवान कहते हैं; जो दोष दृष्टि के कारण उनका कहा नहीं मानते, वे सारा ज्ञान पाकर भी :

1. विमूढ़ ही हैं।
2. नष्ट हो जाते हैं।
3. अविवेकी रह जाते हैं।
4. अन्धे ही रह जाते हैं।
5. मोह ग्रसित रह जाते हैं।
6. अंधकार में ही रह जाते हैं।
7. तनत्व भाव का त्याग नहीं कर सकते।
8. कर्तृत्व भाव का त्याग नहीं कर सकते।

9. निष्काम भाव में स्थिति नहीं पा सकते।
10. निरासक्त नहीं हो सकते।

नन्हीं! इसलिये तो कह रहे हैं कि :

क) अपना तन अविवेकी गण के साधारण कामों के लिये भी दे दो।

ख) दूसरों के काम करना और दूसरों के सपने पूरे करना ही तनत्व भाव त्याग का अभ्यास है।

ग) अपना ममत्व भाव छोड़ कर औरों के ममत्व भाव को मत ठुकराओ।

घ) अपने तन, मन और बुद्धि के प्रति उदासीन होकर दूसरे लोगों के कार्यों का समर्थन करो।

ङ) लोगों को बुरा भला कह कर उन्हें छोड़ न दो, अपने तन को 'मेरा नहीं' कह कर लोगों को दे दो।

नन्हीं!

1. दिनचर्या में आत्मवान की तरह विचरने का अभ्यास करो।
2. अहंकार रहितता का अभ्यास करो।
3. अपने जीवन को शास्त्र कथित वाक्यों से तोलो।
4. आपका जीवन शास्त्रों की जीती जागती प्रतिमा होना चाहिये।
5. आत्मवान, 'मैं आत्मा हूँ' कभी नहीं कहते। वह तो साधारण जीवन में ऐसे जीते हैं जैसे कि उनकी कोई हस्ती ही नहीं।
6. सहज जीवन में उनका कोई प्रयोजन और योजन नहीं होता।
7. वह तो औरों के प्रयोजन अर्थ योजन बनाते हैं, किन्तु अपनी ही बनाई हुई योजनाओं से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं होता।
8. वह तो आलस्य रहित हुए, नित्य लोगों के काम करते रहते हैं। यदि उन्हें कोई काम न भी दे तो भी नित्य मुदित ही रहते हैं।
9. यानि, वह न तो निवृत्ति की चाहना करते हैं, न ही प्रवृत्ति की चाहना करते हैं। निवृत्ति प्रवृत्ति तन की होती है और वह तो तनत्व भाव को ही त्याग चुके हैं। अब तन कुछ करे या न करे, इसकी उन्हें परवाह नहीं।

नन्हीं साधिका! तन को परिस्थिति के थपेड़े खाने दो। तन को परिस्थितियों से बचाने का प्रयत्न वही कर सकता है जो इसे अपना माने, तुम तो तनत्व भाव त्यागना चाहती हो। जग से भागने वाले तन से नहीं उठ सकते, वह भगवान को क्या पायेंगे?

आपकी 'मैं' को आत्मा में समाना है। आप अपनी 'मैं' को अकेले ही ले आयें, तन को साथ क्यों लाते हो? तन इस जग को देते जाइये।

नन्हीं! ब्रह्म लोक में अकेले ही जा सकते हो। ब्रह्म लोक में आत्मा ही जा सकता है, जड़ तन नहीं जा सकता, चाहे वह तन अपना सहयोगी ही हो।

कर्तृत्व भाव जन्म

पिता जी - जीव को उसके शुद्ध रूप में अकर्ता कहा है। वह अपने स्वरूप को भूलकर कर्ता कैसे बन जाता है? साधक अपने शुद्ध स्वरूप को कैसे प्राप्त करे?

सारांश - पूर्ण ब्रह्म के ब्रह्माण्ड में, व्यक्तिगत करने वाली 'मैं' का जन्म ही व्यावहारिक स्तर पर कर्तापन का अभिमान आरोपित करता है। 'मैं' जब तन, मन और बुद्धि को अपनाकर इसे पूर्ण से भिन्न अस्तित्व देता है, तो तन, मन और बुद्धि की क्रियात्मक शक्ति तथा स्थूल क्रियाओं को अपना कर कर्ता बन जाता है। 'मैं' जब देहात्म बुद्धि छोड़कर ब्रह्म में लय हो जाता है तो कर्तृत्व भाव का स्वतः अभाव हो जाता है।

प्रश्न अर्पण

शुद्ध स्वरूप में जीव को, शास्त्र अकर्ता कहते हैं ।
कैसे कर्ता निज को माने, सत् से कैसे कहो बिछुड़े हैं।।1।।

कोई विधि अब तुम कहो, अकर्ता पुनि हम हो जायें।
कर्तृत्व भाव त्यज करके, निज स्वरूप में टिक पायें।।2।।

तत्व ज्ञान

अपना प्रतीक ब्रह्म ने, अंश मात्र यह जीव रचा।
मन बुद्धि उसे संग दिये, परम शुद्ध उसे रूप दिया।।3।।

रचयिता नियंता आप ब्रह्म, सूत्रधारी वह ब्रह्म है।
शुद्ध रूप में जीव जान, सत् चित् आनन्द है।।4।।

समष्टि जाया समष्टि अंग, व्यष्टिगत जब होने लगा।
व्यक्तिगत निज को किया, अशुद्ध रूप होने लगा।।5।।

स्तेनवत् व्यवहार प्रथम, व्यक्तिगत 'मैं' ही होती है।
पूर्ण ब्रह्म की जा जानो, 'मैं' उत्पन्न जब होती है।।6।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

प्रथम 'मैं' जब उठी आये, तन तद्रूप वह हो जाये।
अज्ञान जन्म यही कहो, व्यक्तिगत जीव जो कर पाये।।7।।

यह मैं हूँ फिर वह मैं हूँ, 'मैं' संचार ही होने लगे।
ज्यों ज्यों 'मैं' विस्तार होये, अज्ञान में खोने लगे।।8।।

प्रथम जन्म अज्ञान का, 'मैं' जन्म ही होये है।
ब्रह्म की जा पर 'मैं' धरा, प्रथम असत् यह होये है।।9।।

सत् सों जब असत् भये, असत् भये शुद्ध कैसे रहे।
चित्त सत् अनुभव कैसे करे, वास्तविकता जब बुरी लगे।।10।।

आनन्द वहाँ कैसे रहे, जब झूठ छुपाना काज भये ।
सत् कहीं न खुल जाये, ऐसे पे चैना कहाँ रहे।।11।।

जब लौ 'मैं' ही न उपजे, तन जन्मे और मिट जाये।
तनो संग फिर कौन करे, जब 'मैं' जन्म न हो पाये।।12।।

गर 'मैं' जन्म वहाँ न हो, अकर्ता ही वह होता है।
जिस पल 'मैं' कहे 'मैं करूँ', तब ही कर्ता वह होता है।।13।।

पुनि समझ जो स्थूल में हो, वा का कर्ता 'मैं' नहीं।
त्रिकाल में यह हो सके, ऐसी बात वहाँ है नहीं।।14।।

निर्माणित था इस जग में आ, तन ने क्या क्या करना है।
अंश ब्रह्म का बन करी, जीवन राह से विचरना है।।15।।

दुष्ट या संत का रूप धरी, वा ने जग में विचरना है।
किसका पति को' पिता बनी, क्या कब किसने करना है।।16।।

तन उपजे वा तन संग, तनो रेखा ही बहती है।
प्रयोजन उसका जिसने रचा, विधान यहाँ उस ब्रह्म की है।।17।।

पर 'मैं' उठी के प्रथम कहे, 'मैं तन हूँ यह दूजा है।
यह मेरा है यह मेरा नहीं, यह लोक अब दूजा है'।।18।।

अपने तन को आप कहे, और तनो कर्म से संग करे।
मन उपजे प्रतिरूप में, और मन भी वह आप भये।।19।।

जग में विचरे जिस पल वह, बुद्धि भी उठी आती है।
अनेकों अनुभव जग में हों, वस बुद्धि बन जाती है।।20।।

विपरीत परिस्थिति जो मिले, 'मैं' राही दूर तू हो जाये।
मैं तन मन बुद्धि भये, तब ही मजबूर तू हो जाये।।21।।

तू समझे यह मैंने किया, महा निपुण मैं आप हूँ।
मैं बच निकला देख ज़रा, महा ज्ञानी मैं आप हूँ।।22।।

इसी विधि जग को देखी, दूजे को तू न्यून कहे।
आपुनो बुद्धि जो समझे, श्रेष्ठ उसी को तू कहे।।23।।

यह न्यून श्रेष्ठ की मान्यता, 'मैं' सों ही उठी आये है।
'मैं' ही है जो अहं जन्म, भी साधक कहलाये है।।24।।

है 'मैं' जन्म अज्ञान जन्म, शास्त्र भी यह ही कहते हैं।
सत् में जो हैं टिक गये, वह 'मैं' से परे ही रहते हैं।।25।।

'मैं' तोरी 'मैं' दूजे की, मौन में जीने ही न दे।
एक में भी गर 'मैं' न हो, तद्रूप होई वह जी सके।।26।।

अपनी 'मैं' और दूजे की, 'मैं' कारण तुम दूर रहो।
'मैं' ही रोके 'मैं' को बस, मिलन वहाँ पे कैसे हो।।27।।

अखण्ड सत्त्व की पूर्णता, विभाजित सी यह 'मैं' करे।
समझे अखण्ड खण्डित है यह, अज्ञान यही है जान ले।।28।।

आपुनो 'मैं' जब नहीं रहे, तू स्वतः ही मिट जाये।
आपुनो 'मैं' जब नहीं करे, दूजे की 'मैं' क्या कर पाये।।29।।

सत्त्व सार उस जान लिया, सत्त्व राज़ जब जान लिया।
मैं नहीं वहाँ तू नहीं, उस शुद्ध जीव ने जान लिया।।30।।

पूर्णता में इक कण तन, 'मैं' की नहीं कोई बात है।
कठपुतलीवत् तन यह है, सूत्र ब्रह्म के हाथ है।।31।।

'मैं' का ही विस्तार है, जो जीव कर्ता बन जाये।
'मैं' कर्म न अपनाये, अकर्ता ही वह रह जाये।।32।।

कर्म वह अपनाये तब, तन को जब अपनाता है।
भाव भावना अपनाये, मन से जब संग हो जाता है।।33।।

बुद्धि तब ही अपनाई, जब 'मैं' मिलन वहाँ हो गया।
उपार्जित ज्ञान स्वतः हुआ, समझे ज्ञान वहाँ मैंने भरा।।34।।

सत्त्व में जो तुष्टित भये, वह 'मैं' नहीं कभी कह सके।
संबोधन मात्र 'मैं' रहे, पर निष्प्राण ही वह रहे।।35।।

गर 'मैं' वहाँ पर नहीं रहे, बाकी जड़ ही रह जाये।
गुण गुणन् में वर्ते तब, कर्ता वह नहीं हो पाये।।36।।

कर्तृत्व भाव तब ही मिटे, जब 'मैं' नितांत अभाव भये।
'मैं' ही जिस पल नहीं रहे, कर्ता किस विध वह भये।।37।।

सूक्ष्म भाव है समझ मना, ध्यान लगा के तुम सुनना।
मनन इसी पे चाहिए, सो ज्ञान की राह से तुम सुनना।।38।।

जब आपुनो 'मैं' ही नहीं रहे, आपुनो तन ही नहीं रहे।
दूजे का तन उसका है, यह भी बात तब नहीं कहे।।39।।

'मैं' प्रथम अज्ञान है जो, जब यह मिट ही जायेगा।
वहाँ 'मैं' नहीं वहाँ तू नहीं, अखण्ड मौन रह जायेगा।।40।।

कर्तृत्व भाव अपना गया, दूजे का भी चला गया।
मैंने कर्म ही नहीं किया, तब दूजे ने भी नहीं किया।।41।।

कोई द्वेष करे वह मुस्का दे, कहे इसके बस की बात नहीं।
कोई स्तेन बनी सब लूट ले, कहे चोरी वा के हाथ नहीं।।42।।

कोई कर्ता नहीं हो सके, 'मैं' समझे मैं कर्ता है।
मैं की 'मैं' ही कर्ता है, तू में 'मैं' ही कर्ता है।।43।।

जब जान लिया मैं कर्ता नहीं, दूजा चाहे 'मैं' कहे।
वह जान गया वहाँ 'मैं' नहीं, नाहक ही वह 'मैं' भरे।।44।।

द्वेष गया वहाँ क्रोध गया, लोभ की बात ही नहीं उठे।
यह बदले यह न बदले, ऐसी चाह ही नहीं उठे।।45।।

दोष दर्शन क्या करे, जब कर्ता ही वहाँ नहीं रहे।
पर वह ही यह कर सके, आपुनो 'मैं' जहाँ नहीं रहे।।46।।

सो समझ अज्ञान मूल, 'मैं' को ही तो कहते हैं।
जहाँ 'मैं' नहीं उसे जग वाले, क्षमा स्वरूप ही कहते हैं।।47।।

प्रेम स्वरूप भी उसे कहें, उसे ज्ञानघन भी कहते हैं।
अनेक बार ऐसे को ही, दुःखघन भी कहते हैं।।48।।

सत्त्व सार जो समझ ले, अकर्ता ही हो जायेगा।
जीव अकर्ता ही तो है, पर 'मैं' रहित हो पायेगा।।49।।

इसका राज़ तू समझ मना, सूक्ष्म सार यह कहते हैं।
वेदांत जिसको कहते हैं, अखण्ड की ही कहते हैं।।50।।

आपुनो 'मैं' के कारण ही, दूजा भी वहाँ उठी आये।
आपुनो 'मैं' जब नहीं रहे, कोई कर्ता नहीं रह पाये।।51।।

जिसने राज़ यह जान लिया, कर्ता नहीं वह हो सके।
जीवन प्रमाण अनुरूप भये, तनत्व भाव ही नहीं रहे।।52।।

शुद्ध स्वरूप जीव रूप, कैसे साधक हो सके।
लो विधि यहाँ कहते हैं, जो समझ सके वह समझ ले।।53।।

निज मैं से तब वह पूछे, यह मेरा जन्म कैसे हुआ।
तन मैं नहीं तो तनो जन्म, राम मेरा कैसे हुआ।।54।।

वह संग का शव बना करके, ज्ञान का दीप जलाते हैं।
ज्ञान मशाल का रूप धरे, 'मैं' की चिता जलाते हैं।।55।।

मिथ्यात्व की चिता जब जले, हर वृत्ति वहाँ पे बल जाये।
जब 'मैं' शव भस्मीभूत भये, अग्न रंगी वह बन जाये।।56।।

अग्न रंगी वह हो जाये, आंतर विवेक की अग्न जले।
महा संन्यासी हो वह चुका, विवेक वस्त्र उस पहर लिये।।57।।

बाह्य वस्त्र पहर पहर, संन्यास नहीं कभी आता है।
जिस पल 'मैं' ही नहीं रहे, संन्यासी वह हो जाता है।।58।।

जब निज स्वरूप से प्रीत लगे, तन तब भूल ही जायेगा।
आँख मिले जब राम से, प्रेम तो बढ़ ही जायेगा।।59।।

हो साचो लग्न तो राम सा, तब तू बनना चाहेगा।
राम रूप जीवन में विघ्न, हर वृत्ति तू मिटायेगा।।60।।

कर्तृत्व भाव तो न्यून रहा, तेरा अहं ही रह नहीं पायेगा।
जन्म मरण भी जान मना, तब तुझे छू नहीं पायेगा।।61।।

1.4.1965

जीवन में गायत्री दर्शन

पूज्य माँ के जीवन राही प्रमाणित विज्ञान सहित ज्ञान पर आधारित गायत्री तत्व सार- जैसा मैंने समझा...

डॉ. जे.के. महता

ओम् भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्यः धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्

अर्थात्- *हे परब्रह्म परमात्मा आप जो स्थूल लोक के स्वामी और प्राणों के आधार हैं; सूक्ष्म लोक के स्वामी और संपूर्ण दुःखों को हरने वाले हैं; कारण लोक के अधिपति, संपूर्ण आनंद के दाता हैं; सूर्य रूप में जगत् को उत्पन्न करने वाले एवं उसे प्रकाशित करने वाले हैं; वरने योग्य हैं; संपूर्ण पापों और दुर्वासनाओं को भस्मीभूत करने वाले हैं; आप हमारी बुद्धियों को पवित्र और प्रज्वलित करें; ताकि हम देवत्व के गुणों को अपने में धारण करें!*

गायत्री महामंत्र कहूँ, गायत्री ब्रह्म प्राकट्य कहूँ।
गायत्री साधना पथ कहूँ, तम विमोचक सार कहूँ।।

विवेक जागरण विधि कहूँ, जीवन ब्रह्ममयकर कहूँ।
स्थितप्रज्ञ बुद्धि लक्ष्य, पथ नियोजितकर कहूँ।।

यही ब्रह्म की ध्यान विधि, ब्रह्म आवाहन की विधि।
आवृत जीव परम होये, गायत्री है उसकी विधि।।

रचनात्मिका शक्ति अंशी की, मौन गायत्री होये है।
अंशी जीव में ये शक्ति, वा मस्तिष्क ही होये है।।

(प्रज्ञा प्रतिभा से 'गायत्री' के संदर्भ में)

मुझे पिछले 36 वर्षों से निरन्तर परम पूज्य माँ के साथ रहने का दुर्लभ सौभाग्य मिला है। उनकी आन्तरिक स्थिति तक तो मेरी पहुँच नहीं, परन्तु इतने वर्षों के घनिष्ठ सम्पर्क के परिणामस्वरूप आज मैं

निस्संदेह इतना कह सकता हूँ कि परम पूज्य माँ का जीवन प्रवाह ही शास्त्रों की प्रतिमा है। आज तक मेरे लिये शास्त्र का जो भी ज्ञान प्रकाशित हुआ है, पूज्य माँ के जीवन राही ही हुआ है। उस का यह प्राकट्य भी उनकी ही कृपा का प्रसाद है।

36 वर्ष पूर्व जब मैं पूज्य माँ से मिला तो मैं उनको अति साधारण मानता था, दूसरी ओर अपने आप को बड़ा शास्त्रज्ञ और ज्ञानी मानता था। आज सोचता हूँ वह कैसे भोले भाले अज्ञानीवत् मेरे ज्ञान को बड़ी श्रद्धा और प्रेम से सुनते थे और मुझे जीवन में उसकी ही प्रतिमा लगते थे। जो भी मैं कहता गया, पूज्य माँ तत्काल जीवन में उसका साकार रूप धरते गये। उनकी इस दिव्यता के परिणामस्वरूप पाँच वर्ष के इस सम्पर्क एवं दर्शन के बाद मैंने उन्हें अपने ज्ञान की तुला पर पूरी तरह तोल कर उन्हें शास्त्र की प्रतिमा घोषित कर दिया।

आज मैं जानता हूँ कि यह तो माँ की मेरी साधना की मान्यता और आदर्श के साथ तद्रूपता थी। भेद भाव रहित जो भी उनके सम्पर्क में आता है, चाहे अपना हो या पराया, उनका जीवन निरन्तर सम भाव से सब के साथ तद्रूपता का प्रमाण है। यह तो वेदान्त की पराकाष्ठा, अद्वैत का जीवन में दर्शन है, जो हमें पल पल मिलता है।

पिछले 30 वर्षों से जो ज्ञान मैं प्रमाण सहित पूज्य माँ से पा रहा हूँ, उसके आधार पर उन्हें मैं शास्त्रों की सजीव और सप्राण प्रतिमा जान रहा हूँ। आज मैं यह भी जानता हूँ कि 36 वर्ष पहले, जब वह प्रथम बेला मेरे सम्पर्क में आये, तब भी वह यही थे, जो आज हैं। वास्तव में उनके जीवन में गायत्री माँ का ही स्पष्ट रूप देखता हूँ।

यह तो मेरे आन्तर में अहं जनित अज्ञान का आवरण था, जो उन्हें देख न पाया। आज जितना जितना मेरा आवरण शेष है, उतना ही मैं उन्हें नहीं देख पाता।

पूर्ण विश्व ब्रह्म की रचना है, इसे उस का ही विराट रूप कहते हैं। इसको ही ओम् का प्रथम पाद भी कहते हैं। वैश्वानर रूप धरी वह परम ब्रह्म इस विराट संसार में इस प्रकार ओत प्रोत हैं जैसे माला के मनकों में धागा! यह स्थूल और सूक्ष्म, जो ओम् के प्रथम और द्वितीय पाद कहलाते हैं, ब्रह्म का ही संकल्प हैं। वह ही इस के रचयिता, पालन-पोषण कर्ता और संहार करने वाले हैं। ब्रह्म की यह संकल्पात्मिका शक्ति ही गायत्री कहलाती है। यह शक्ति उनसे उसी प्रकार अभिन्न है, जैसे सूर्य से उसका प्रकाश। वेद गायत्री तत्व की ही महिमा गाते हैं। यह गायत्री ओम् के त्रिपाद रूप, यानि कारण, सूक्ष्म और स्थूल रूप धर कर प्रकट हो रही है।

अपनी ही माया से आवृत हुई यह गायत्री माँ नज़र नहीं आती, यही अज्ञान का आवरण है। साधक इसी आवरण को दूर करने के लिये गायत्री मंत्र का सहारा लेता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने 'कर्मजम बुद्धि' की बात कही है। बुद्धि वह है जो कर्मों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है; यानि मस्तिष्क में ज्ञान का प्रकाश निष्काम कर्म की पराकाष्ठा के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। माया के आवरण को दूर करने की यही एकमात्र विधि कही गई है। साधक इसी विधि को अपनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यही गायत्री मंत्र का जीवन में जाप है।

पिछले 36 वर्षों से मैं पूज्य माँ को इसी गायत्री मंत्र का निरन्तर जपन करते हुए देख रहा हूँ। यह जपन पहले पाँच वर्ष प्रत्यक्ष प्रमाणित जपन था और अब यह ऐसा सहज जपन है, जिसे अजपाजाप कहते हैं। गायत्री मंत्र का उच्चारण तो मैंने पूज्य माँ के मुखारविन्द से बहते हुये कभी भी नहीं सुना, परन्तु उन्हें जो भी मिला, उनका भाव उनकी वाणी से प्रवाहित इन शब्दों में स्पष्ट होता है-

'सुहृदय मित्र या अरि मिला, हर रूप में मुझको हरि मिला!'

पूज्य माँ का यह विलक्षण आन्तरिक दृष्टिकोण अनेकों बार महान से महान प्रतिकूल अथवा अनुकूल परिस्थितियों में देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। हम ने अपनी समझ के अनुसार उन्हें प्रेम, करुणा, क्षमा इत्यादि अनेकों दैवीगुणों के नाम से पुकारा, परन्तु आज दीख रहा है कि उनके इस दैवी जीवन के दिव्य बहाव का आधार है गायत्री तत्व में उनका निरन्तर वास! साधना काल के तथाकथित पहले पाँच सालों में इसने अभ्यास का रूप धरा और तत्पश्चात् अभ्यास करने वाला भी उस तत्व में ही खो गया और रह गया केवल एक सहज बहाव!

आज पूज्य माँ में गायत्री मंत्र का यह अद्भुत जपन और गायत्री तत्व का प्राकट्य देख कर मैं धन्य हो गया। ❖

..मिटकर ही रे जान ले,
अखण्ड तत्व इक वह ही है!

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम्।।

मुण्डकोपनिषद् - 2/2/11

अर्थात् - यह अमृतस्वरूप परब्रह्म ही सामने है; ब्रह्म ही पीछे है; ब्रह्म ही दायीं ओर तथा बायीं ओर.. नीचे की ओर तथा ऊपर की ओर भी फैला हुआ है; यह जो सम्पूर्ण जगत् है; यह सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म ही है।

तत्व विस्तार:

ऊपर नीचे चहुँ दिशा रे, एक ब्रह्म ही छाया है।
अखिल रूप रे जान ले, ब्रह्म ही धर कर आया है।।1।।

अमृत स्वरूप ब्रह्म ही तो, सर्वोपरि रे यह ही है।
अखण्ड रूप अद्वैत तत्व, एक सत्त्व रे यह ही है।।2।।

सम्मुख है ब्रह्म पाछे भी, उत्तर दक्षिण और वही।
ऊपर नीचे विस्तृत ब्रह्म, अखिल दिशा रे है वही।।3।।

सर्व व्यापक रे वह ही है, सर्व रूप रे वह ही है।
सत्त्व सार मन जान ले, अखिल रूप रे वह ही है।।4।।

स्वप्न में ज्यों सब द्रष्टा है, स्वप्न लोक पूर्ण वह है।
माटी का ज्यों पात्र बनें, पात्र रूप सर्व वह है।।5।।

विश्वेश्वर वह आप ही है, विश्व रूप भी वह ही है।
सर्वात्म वह आप ही है, विश्व आत्म भी वह ही है।।6।।

हिरण्य गर्भ जग स्थिति लोक, तैजस भी वह आप है।
समझ सके तो समझ लो, सर्व लोक रे आप है।।7।।

मूर्त अमूर्त जड़ जंगम, सम्पूर्ण इक आप है।
सर्वश्रेष्ठ कारण तन भी, सर्व स्थित वह आप है।।8।।

चहुँ दिशा वह ही छाया है, चहुँ दिशा भी वह ही है।
कैसे कहूँ मन समझ लो, जो है वह सब वह ही है।।9।।

स्थूल रूप और सूक्ष्म रूप, कारण भी रे वह ही है।
त्रि अवस्था के परे, महा कारण वह ही है।।10।।

उत्पत्ति स्थिति है वह, लय अवस्था वह ही है।
इनसों परे समझो तो कहें, मौन अवस्था वह ही है।।11।।

बाह्य प्रज्ञता वह ही है, आन्तर प्रज्ञता वह ही है।
मौन अवस्था वह ही है, अखण्ड स्थिति बस वह ही है।।12।।

मन है वह और हृदय है वह, श्रवण ध्यान समाधि वह।
आनन्दमय वह प्राणमय, मनोमय विज्ञान है वह।।13।।

आनन्दमय भी वह ही है, तुरिया उसे ही कहते हैं।
तम रज सत्त्व रे वह ही है, और गुणातीत भी कहते हैं।।14।।

कर्मफल वृक्ष रे वह ही है, भोगी पक्षी आप भये।
द्रष्टा पक्षी रूप में, हिय स्थित भी आप रहे।।15।।

महाभूत तन्मात्रा भी, प्रकृति महा तत्व वही।
कर्म है वह और तम है वह, ज्ञान वही और सत्त्व वही।।16।।

पृथ्वी लोक वह आन्तर भी, द्यु लोक भी वह ही है।
परम लोक भी वह ही है, और लोक परे भी वह ही है।।17।।

प्रकृति जीव और ईश्वर वह, विश्व तैजस प्रज्ञा वह।
विराट हिरण्य गर्भ है वह, सर्वज्ञ ईश्वर भी है वह।।18।।

अद्वैत अखण्ड रस है वह, विभाजित आप ही वह भये।
अनेक रूप सब नाम रूप, वह परम आप धरे।।19।।

शास्त्र वही गुरु वही, आत्म तत्व भी वह ही है।
भाव प्रवाह और भाव भी, भाव रहित भी वह ही है।।20।।

भाव परे अचिन्त्य रूप, अग्राह्य तत्व भी वह ही है।
सर्वोपरि सर्व रूप, अतीन्द्रिय सत्त्व भी वह ही है।।21।।

जड़ शब्द भाव है वह, मौन उसी को कहते हैं।
रूप नाम और नामी वह, पर परे वह रहते हैं।।22।।

अधिभूत वह अधियज्ञ, अधिदेव भी वह ही है।
अपरब्रह्म वह जीव भाव, और परब्रह्म भी वह ही है।।23।।

पूर्व कर्म जो हो चुके, परिणाम रूप जग वह ही है।
आधुनिक कर्म जो हो रहे, मन स्वरूप भी वह ही है।।24।।

आगामी कर्म कर्माशय में, बस कहें रे वह ही है।
रूप कभी जो धर लेंगे, पूर्ण ही इक वह ही है।।25।।

ओम् है वह राम है वह, कृष्ण रूप भी वह ही है।
रामकृष्ण वह चैतन्य वह, नानक रूप भी वह ही है।।26।।

साधक रे तू समझ ले, तेरा स्वरूप भी वह ही है।
जो भी नाम रूप तेरा, वह नाम रूप भी वह ही है।।27।।

ज्ञान सार रे यह ही है, जो है सब बस वह ही है।
मिटकर ही रे जान ले, अखण्ड तत्व इक वह ही है।।28।।

एक में एक होई जाने, बस एक में एक रे वह ही है।
सम्पूर्ण ही जग सपने में, एक द्रष्टा रे वह ही है।।29।।

17-9-61

।।द्वितीय खण्ड समाप्त।।
।द्वितीय मुण्डक समाप्त।।

क्रमशः

..जो गंगे ने हमें दिया, हमें सीस झुकाना ही होगा!

('गंगा श्रद्धा प्राणप्रद')

हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स गैस्ट हाउस, ऋषिकेश
10 नवम्बर, 1971

परम पूज्य माँ जब मधुबन, करनाल से चले तो वह इतने अस्वस्थ थे कि साधारणतय: कहीं आने जाने का प्रश्न ही न उठता। हृदय से मस्तिष्क की ओर रक्त-संचारक नाड़ी के संकुचित हो जाने से पूज्य माँ अधिकांश अस्वस्थ रहते हैं। अनेकों बार इसी कारण अंग शिथिलता हो जाती है, मस्तक अथवा अन्य अंगों में भी अतीव पीड़ा हो जाती है।

10 नवम्बर, 1971 को श्रीमती कमला भंडारी का जन्म दिवस था। उनकी तीव्र लग्न गंगा माहात्म्य ज्ञान तथा गंगा प्रसाद पाने की हुई। यद्यपि वह गंगा में विश्वास या श्रद्धा नहीं रखते थे, फिर भी उन्होंने पूज्य माँ की साधना बेला की गंगा के प्रति श्रद्धांजलियाँ पढ़ी थी। उन्हीं से प्रभावित हो पूज्य माँ सों माँगा, 'मुझे भी गंगा में श्रद्धा दो।'

श्रीमती भंडारी की तीव्र लग्न के तद्रूप हो कर ही पूज्य माँ स्वयं मोटर चलाकर ऋषिकेश की ओर चल दिये। सुना है राह में पूज्य माँ मोटर चलाते हुए, गाते, रिझाते और प्रश्नोत्तर करते उपरोक्त स्थान पर पहुँचे।

रात्रि का गहन अंधकार पूर्णरूपेण छा चुका था। यहाँ भोजन इत्यादि करते हुए दस बज गये। तब पूज्य माँ ने श्रीमती कमला भंडारी से कहा कि चलिये गंगा जी को मिल आयें। श्रीमती कमला भंडारी,

जो डॉक्टर भी हैं, पूज्य माँ की अस्वस्थता, राह की थकान तथा निजी अश्रद्धा के कारण उन की बात टालने लगे और कहने लगे, 'इस समय हम नहीं जायेंगे'। पूज्य माँ समझाने लगे कि जिस दैवी गंगा की अतिथि बन के आये हो उसे बिना मिले, बिना उसके दर्शन किये, यहाँ रहना सभ्यता विरुद्ध है, ऐसे अनादर जनक व्यवहार पश्चात् प्रसाद कैसे मिलेगा? श्रीमती कमला भंडारी की उद्विग्नता फिर भी दूर न हुई.. तो पूज्य माँ के मुखारविन्द से अभंग स्रोत बह निकला :

पूज्य माँ :

हम गंगा बिन मिले हुए, यहाँ एक पल नहीं रह सकें।
इतनी जुदाई गंगे से, अरे अबहुँ नहीं हम सह सकें।।1।।

महा पावनी गंगा यह, उसको आन्तर आने दो।
इक बेरी पुकार तो लो, पावन मन हो जाने दो।।2।।

गंगा की तुम बात कहो, वह महा पावनी जान रे ले।
इक पल में पावन कर दे, क्यों नहीं तू समझ सके।।3।।

जब यह श्रवण करके भी श्रीमती भंडारी निज मान्यता में दृढ़ रहीं और गंगा तट पर जाने को उद्यत न हुईं, तो पूज्य माँ कहने लगे :

सपनों की रानी मोरी गंगा है, गंगे मोरी जिंदगी।
अरे कैसे चैना आयेगी, बिन किये वहाँ बंदगी।।1।।

तुम कहो हम जायें न, हम को जाना ही होगा।।
तुम रूठो चाहे उससे सखी, हमें उसे मनाना ही होगा।।2।।

जो गंगे ने हमें दिया, हमें सीस झुकाना ही होगा।।
पावन गंगे ने रे किया, हमें तो जाना ही होगा।।3।।

वह लाड़ मेरा वह सुहाग मेरा, जीवन वा वरदान दिया।
क्यों न कहूँ सच ही कहें, राम का नाम मुझको दिया।।4।।

मैं तो गंगा पास जाऊँगी, मैं वहाँ पे सीस झुकाऊँगी।
तुम बैठो गर चाहो सखी, मैं तो इस पल ही जाऊँगी।।5।।

गंगे गंगे गंगे री, मन इसका तू रंग दे री।
पावन करनी तुझे कहें, इसको भी पावन कर दे री।।6।।

गंगे गंगे गंगे.....

गंगा का तट, मुनि की रेती, ऋषिकेश
रात्रि के 10:30 बजे

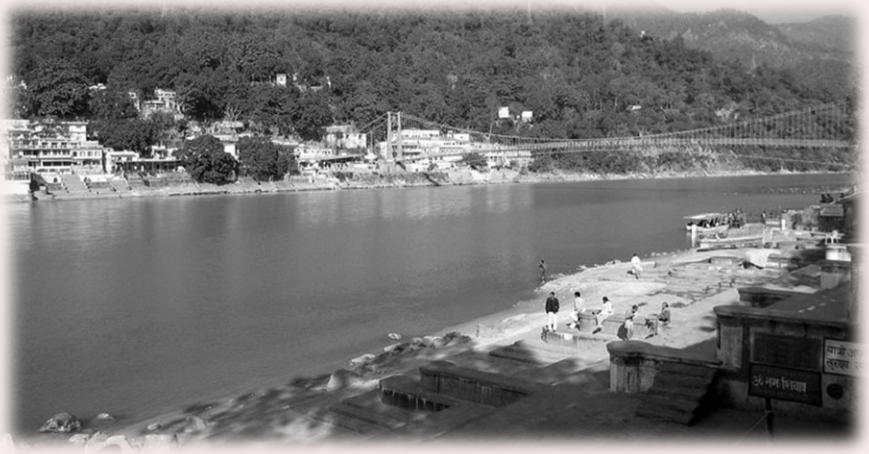

जैसे ऊपर अभिव्यक्त कर चुके हैं कि श्रीमती भंडारी की गंगा में कोई श्रद्धा न थी तो अश्रद्धालु हृदय में श्रद्धा का बल देने के लिये पूज्य माँ ने गंगा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गंगा मैया से कहा:

गंगे गंगे तुझे मिलने, बहुत ही दूर से आये हैं।
गंगा मैया आन मिलो, हम तेरे ही जाये हैं।।1।।

तूने हमें बुलाया था, तव शरण में आये थे।
प्रेम भरा इक हृदय लिये, तोरे चरण में आये थे।।2।।

इक आँसू आँखों में भरी, तुझ में हम रे बहाये थे।
बार बार यह ही कहें, हम पावन होने आये थे।।3।।

इक बुँदिया आँख की तूने ली, आँसू तू न सह सकी।
बहाव लेकर आपुनो, तू हृदय राही रे बह निकली।।4।।

तुझको क्या दूँ गंगे आज, तूने राम से हमें मिला दिया।
तेरे चरण में क्या बैठे, तूने राम कृपा प्रसाद दिया।।5।।

तुझको क्या मैं गंगे दूँ, बस सीस झुकाने आई हूँ।
गंगे गंगे गंगे कही, तुझे बुलाने आई हूँ।।6।।

मेरी बंदगी स्वीकार करो, तेरा प्रसाद तो मिल चुका।
याद हृदय में ऐसी बनी, तेरा प्रभाव भी मिल चुका।।7।।

पावन करनी तू ही है, अनुभव से मैं जाने हूँ।
प्रेम दायिनी गंगे तू, प्रेम बहाव से माने हूँ।।8।।

शिव से तू उत्पन्न हुई,
शिव करनी मैं जाने हूँ।
शिव रूप मूर्त तू घड़े,
आज मैं यह भी जाने हूँ।।9।।

करुणा पूर्ण तू री है,
यह भी मैंने जाना है।
मिलन अंगनी गंगा तू,
अंग मिला के जाना है।।10।।

और तुझे मैं क्या रे दूँ,
और तुझे मैं क्या कहूँ।
ओ गंगे जो जैसी हूँ,
जान लो माँ मैं तेरी हूँ।।11।।

अमरत्व दे वरदान दे, यह मैंने रे जान लिया।
अपावन को तू शिव कर दे, तव गुण यह पहचान लिया।।12।।

आज मैं केवल चरण में आ, बंदगी तेरी करूँ।
जो भी हूँ गंगे जानूँ, जिंदगी तेरी ही हूँ।।13।।

ओ गंगे गंगे गंगे री, ओ गंगा तुझको क्या कहूँ।
तू बिन कहे सब कह चुकी, तेरी तुझको क्या कहूँ।।14।।

पूज्य माँ की श्रद्धांजलि को जब श्रीमती भण्डारी ने सुना तो द्रवीभूत हो भक्ति भाव में आकर गद्‌गद् ध्वनि में बोल उठीं- 'हमें क्या करना होगा, क्या बनना है, फिर कैसे हो, कैसे भाव में पुकारूँ गंगा को?'

पूज्य माँ कहने लगे :

गंगे माँगे पुकार तोरी, तू पावन भये तो क्या करे।
शिव बनने की चाहना है, तो कह दो पावन तू कर दे।।1।।

विष पियें शिव देख ज़रा, कंठ पे सर्प रे लिपटे रहें।
फिर भी सुख सब को रे दें, क्षति किसी की नहीं करें।।2।।

लाख भुलाये जीव उन्हें, लाख उन्हें ठुकराया करे।
बार बार बहु बात कही, दिल उनका रे तोड़ दे।।3।।

शिव शिव कही देख जहान में, क्या क्या होता रहता है।
जो भी नाता बंधु तेरा, वह ही रोता रहता है।।4।।

कोई कुछ भी तुझे कहे, तब भी मुसकान रे मुख पे हो।
यह चाहना गर हृदय में हो, तो गंगे को पुकार रे लो।।5।।

गर आपुनो स्थापति चाहते हो, गंगे से मत बात करो।
गर शिव धरती पर लाना है, तो गंगे का तुम नाम लो।।6।।

हो पुकार तोरी साचो मना, उत्स तलक यह ले जाये।
सच मानो कहूँ अनुभव से, शिव बना गंगा पाये।।7।।

अश्रुधारा युक्त, विनीत, विनम्र, व्यथित मनी होकर श्रीमती कमला भंडारी बोल उठीं- 'अब कैसे हो?'

पूज्य माँ ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया :

मद मस्त हुई गाती जाती, हँसती जाती है गंगा।
प्यार भरी इक तान में, यह नाचे नित रे गंगा।।1।।

ठुमक ठुमक यह चाल चले, देख कभी यह इतराये।
प्यार से इसको देख लो, प्यार वहाँ पे उमड़ आये।।2।।

देख देख यह गंगा.....

प्रेम से जीवन यह भर दे, ज्ञान से पूर्ण मन कर दे।
मन तेरा बुद्धि का तब, जान मना फिर रूप धरे।।3।।

यह सब कुछ है रे गंगा, देख ज़रा यह गंगा.....

इठलाती मदमाती हुई, बल खाती चली यह गंगा।
मंद मंद मुसकाती हुई, देख देख चली गंगा।।4।।

देख चली यह गंगा.....

प्यार से इसको देख लो, प्रेम फुहार है गंगा।
झूठी बात गर इसे कहो, असुअन् की धार है गंगा।।5।।

क्रमशः

कैसी अनुभूति है यह..
जिसे ज़ुबां ब्यां कर ही नहीं पाती!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, कैसे ध्याऊँ.. कैसे गुण गाऊँ माँ.. जो अपने गंगावत् प्रवाह में प्रवाहित करी अपनी इस कनीज़ को लिवाये लिए जा रहे हैं! कौन कहता है आप अदृश्य हैं? आप तो हर पल सामने रहते हैं नज़रों के.. और नज़राने के तौर पर हृदय में.. जिसे आप स्वयं सींच सींच कर 'सदाबहार' फूलों की तरह खिलाये रहते हैं।

आप की मुहब्बत फुहार की तरह तन मन को सँजोये रखती है। जो हमारे क़दम आपका सदक़ा उतारते हुये सदा प्यार मुहब्बत से आप ही आपके जानिब चलते ही चलें.. आप सृजनकर्त्ता की ओर! अपनी दैवी सम्पदा का निरन्तर हमारे हृदयों में सृजन करते हुये.. अपने क़रीब होने का एहसास दिलाते हुये.. कभी भी भटकने नहीं देते।

यह अलग बात है कि हम ही अँधेरों को चुन लें.. तब भी करुणापूर्ण, आप हमें इस क़दर देखते हैं कि अगर आपकी नज़रों से नज़रें मिला कर आप माँ को देख पायें.. तो समझ पायें कि हम कर क्या रहे हैं.. अपने ही मालिक का हाथ छोड़ रहे हैं। काश, हम इस सत्यता को आँख खोल कर देख पाते तो कभी भी सत से विमुख न होते.. आप सृष्टि में व आंतर बाहर कैसी आभा बिखेर रहे हैं, यह देख पाते।

हे माँ की सरस सुधा, तू तो सच ही हर रूप में पूर्ण है! हे पूर्ण की पूर्णता में स्थित श्री हरि प्रभु माँ, आपको शत् शत् प्रणाम! हे दिव्य विभूति पाद, आपकी दिव्य व अलौकिक सुन्दरता को शत् शत् प्रणाम! आपकी सरस सुधा जब हृदय को छूती है तो ऐसा लगता है कि आपके साक्षात् दर्शन कर लिए व धन्य धन्य हो गये!

कैसी अनुभूति है यह.. जिसे ज़ुबां ब्यां तो करती है मगर लगता है कर ही नहीं पा रही। बात भी सच है, हम अधूरे सधूरे क्या ब्यां कर पायेंगे आपको? हाँ, आप सागर अपने को जब गागर में उड़ेलते हैं तो गागर की बिसात कहाँ कि आप सागर को अपने में भर ले। मगर मालिक जो स्वयं करते हैं तो कुछ भी कर सकते हैं और वही आपने मेरे जीवन में किया है।

जितना जितना ही जगती में आपका विस्तार होते हुये आपको देखती हूँ, तो आप ही से पूछती हूँ, 'यारब, वह जगह बता जो सजदे के काबिल नहीं हैं.. आपकी व्याप्कता तो अपने आप में इतनी मुकम्मल है.. नत श्री बारम्बार होते हुये पुनः पुनः आपको नमस्कार करती हूँ।'

यह सत्य है माँ, जितने भी आपने मेरे लिये रूप धरे.. उस अपने परिचय में ही मुझे मुझी से मिला दिया-

क्या मिलूँ ख़ुद से अब जब बेख़ुदी में उसे ले आये आप
इक आप ही आप हैं सब जा माँ प्रभु जी
तभी जानी कि अलग कहाँ हूँ आपसे आज
आप ही से आपकी हूँ आपका अपना आप
कैसे कहूँ पराई हूँ मैं जब एक एक बस एक है
एको आप अपना आप

हे श्री हरि नाथ, जब आपने स्वयं अपने से सनाथ किया हुआ है अपनी इस कनीज़ को.. तो मेरे अपने जीवन कार्यों में अपनी ही इच्छा व्यक्त कीजिये, जो पूर्णतया आप ही से आप में संभली रहूँ! हरि ओम्!

हे परम कल्याणी, आप ही जब मेरे कल्याण के लिए पग उठाते हैं तो इस मेरी 'मैं' को निर्धन व निरामिमान कर लेते हैं.. अपनी विशालता में इस मैं को ले आते हैं। मैं, जो मात्र सम्बोधन के लिये है।

कृतज्ञ हूँ, आप श्री हरि माँ प्रभु जी की.. जिन्होंने अंग से अंग मिलाकर हर अंग मेरे को पुष्टित व पल्लवित कर दिया। आप की उस मुहब्बत का शुक्रिया अदा करती हूँ जिसे इबादत कहते हैं व जो सजदे के काबिल है! ईश्वर करे, यूँ ही सदा आपके सजदे में घिरी रहूँ.. आप परम पूज्य श्री हरि माँ ने अपनी बेइंतहा कृपाओं के बीच उसे ला खड़ा किया.. बंदगी भी ख़ुदा की आपने करी और करके फिर स्वीकार भी स्वयं करी!

धन्य धन्य होते हुये अपने भाग्य का भी धन्यवाद करती हूँ.. जो आप से परम सौभाग्य पा, हर पल आपके दर्शनों को पाने का अवसर पाये हुये हूँ। कैसे हर क़दम आप अपनी मुकम्मलता की ओर बढ़ाते हुये इस कनीज़ को अपना परिचय दिये चले जा रहे हैं.. व इसे पूर्ण मिलन के योग्य बना रहे हैं। अपने हृदय कोष को इतनी उदारता व स्नेहासिक्त हृदय से इसके हृदय में उतारते जा रहे हैं। आपकी महिमा का पार पाना बहुत ही कठिन है।

यह सच है, जिसे आप माँ जनवाना चाहते हैं वही जान पाता है.. आप तो अपने विस्तृत विस्तार में अपनी मुहब्बत को हर पहलू से लुटाते ही चले जा रहे हैं व इस हृदय को प्रेम से ओतप्रोत करते जा रहे हैं।

अपना सर्वस्व लुटा कर आप तो ख़ामोश हो गईं.. मगर मेरी प्रार्थनाओं का सिलसिला आज भी करबद्ध हुआ आप ही आपसे प्रार्थना याचना कर रहा है जो उसको आप ही की चरण शरण में रहने का अवसर प्रदान हुआ रहे! हे नाथ, जब आप से ही सनाथ हुई रहने का मौका मिला हुआ है आपसे.. तो हे परवरदिगार, इतना करम और कर दीजिये जो पूर्णतया ख़ाली हो कर ही व अपने रब को रोम रोम में व्याप्त पाये हुए आप में समा जाऊँ..

हे माँ, इसे अपने धाम में यूँ ही लिवा ले जाइयेगा! परम मिलन की जो भूमि प्यार की है आप मेरा हर क़दम उसी पुण्य भूमि पे धरा लीजियेगा। आपकी उसी मेहर का ज़हेनसीब बना रहे.. जब तलक आप ही आप में विराम न पा जाऊँ। आमीन

आप हे श्री हरि माँ, जगत के मान-अपमान, लज्जा, भय से कैसे मुक्त कर लेते हैं.. स्वयं को इतना छोटा कर लेते हैं, हमें हमीं से उठाने के लिये आफरीन जाती हूँ आपकी उस प्यारी अदा पर! कैसे कैसे आप अपने क़दमों से चल कर हमें जीने की राह देते हैं, जो प्यार के तब्बसुम ही खिले रहें उस हृदय में! कितनी कोमल भावनाओं का विस्तार हृदय में करके सभी के लिये हर दिल को धड़कना सिखा देते हैं।

कैसे हम आप से उसी पाई राह पर चल पायें व आप ही के अनुरूप ढल पायें.. यही असीस आप से सदा पाती आ रही हूँ और यही दुआ भी करती हूँ कि आप ही हमेशा की तरह कर पकड़ी मुझे लिवा ले जाइयेगा। इस का यही दिव्य प्रसाद आप श्री हरि माँ प्रभु जी से पाये रहूँ। आपको सगुणवेश में धरा पर यूँ पाना.. आप ही का अलौकिक व दिव्य प्रसाद है, जिसे पाने के लिए आप कितने युगों से मेरे लिये चलते ही चले आ रहे हैं।

इस अनमोल धरोहर को जीवन में धारण करते हुये व आपकी चरण-रज सीस चढ़ाते हुये आप ही आप में विराम पा जाऊँ। यही शुभ व मंगलमय कामना करते हुये अपने समेत अपना सर्वस्व आपके क़दमों में धरती हूँ! मेरे जीवन में अपनी प्रीत की ही लाज निभा लेना हे श्री हरि माँ, जो यह आपके क़दमों में परवान चढ़ जाये! हरि ओम्

तनो जन्म

परम पूज्य माँ का जन्म 26 अगस्त 1924 को लाहौर में हुआ! यहाँ पर उनके जन्म बेला का विस्तृत वृतान्त हमें उनकी अपनी ही वाणी में मिलता है! साथ ही साथ हमें उनकी दोष दृष्टि के पूर्ण अभाव के दर्शन होते हैं यहाँ! दूसरे के दृष्टिकोण को पूर्णतया समझ कर भक्त किस प्रकार दूसरे को पूर्णतया दोष विमुक्त कर देता है इसकी एक झलक हमें निम्नलिखित प्रवाह में मिलती है।

1958 में पूज्य माँ की तथाकथित साधना और गहन अध्ययन आरम्भ होते ही छोटे माँ इनके पास आकर रहने लग गये। तत्पश्चात् वह हर स्थान पर इनके साथ जाते, जिससे उनको पूज्य माँ के जीवन के विभिन्न पहलुओं का बहुत निकट से अनुभव व दर्शन हुआ! उन्होने देखा कि पूज्य माँ जब भी अपने तन के नातों के पास जाते, इनको विशेषकर अपनी तनोजननी से अधिकतर तिरस्कार ही मिलता! पूज्य माँ से घनिष्ठ प्रेम के कारण छोटे माँ के लिये यह बात असह्य हो जाती! दूसरी ओर छोटे माँ देखते कि इतना कुछ हो जाने पर भी पूज्य माँ का प्रेम प्रवाह ज्यों का त्यों अविरल बहता, और कुछ ही क्षण के पश्चात् वह जाकर अपनी जननी को मनाने लगते और फिर बड़े प्रेम पूर्ण भाव से वहाँ से विदा होते।

एक ओर तो पूज्य माँ का दिव्य और विलक्षण प्रेम, असीम सहिष्णुण और दूसरी ओर उनकी अपनी ही जननी द्वारा उनका तिरस्कार.. इन दोनों बातों का समन्वय कर पाना उनके लिए बहुत कठिन था। विशेषकर इसलिए, क्योंकि जिस भागवद् प्रेम की डोरी से बन्धे छोटे माँ पूज्य माँ से अभिन्न रूप से जुड़ गये थे, उसी भागवद् प्रेम के कारण पूज्य माँ का अपना ही तनोकुल उनकी अवहेलना कर रहा था। जब सांसारिक मान्यता से पूर्णतया विपरीत, अपने सारे सुख वैभव इत्यादि को त्याग पूज्य माँ ऋषिकेश चले गये, तो यह अवहेलना अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। एक अति विशिष्ट समृद्ध परिवार के लिए दृष्ट रूप में अपनी भिक्षुक पुत्री मान का नहीं, अपमान का द्योतक थी। इन सब बातों को देखकर छोटे

माँ के मन में विक्षेप स्वाभाविक था। इसी से उद्विग्न होकर उन्होंने परम पूज्य माँ से प्रश्न किया, 'आपके परिवार में आपकी इस प्रकार अवहेलना क्यों होती है? आपकी माता जी भी आपको नहीं समझ पातीं, ऐसा क्यों?'

छोटे माँ के इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में ही यह प्रवाह बहा! यहाँ पर पूज्य माँ ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनी जननी को पूर्णतया दोष विमुक्त किया है.. तथा अपने जन्म की विलक्षण परिस्थितियों तथा उनमें जननी के मनोभावों का स्पष्ट चित्रण् किया है।

पूज्य माँ अपने परिवार में तीसरे शिशु हैं.. इनसे अग्रज इनके बड़े भाई तथा बड़ी बहिन हैं। प्रथम पुत्र तथा तत्पश्चात् कन्या के जन्म पर तनोजननी को उनके धैर्य के कारण जग से बहुत मान मिला होगा, लोगों ने बधाई दी होगी, सो उनसे तो जननी का स्नेह स्वाभाविक ही था। अब इनका तो जन्म लग्न ही विलक्षण था। उस दिन भगवान की प्रेरणा से ऐसी परिस्थिति बनी कि परिवार में कोई था ही नहीं। जब प्रसव पीड़ा आरम्भ हुई तो इनकी जननी घर में बिलकुल अकेली थीं। ऊपर से घनघोर घटा एवं आँधी तूफ़ान छा गये, जिससे पीड़ित जननी और भी भयभीत हो गई। उस पल तो उनको यही लगा होगा कि अब प्राण जाने वाले हैं और आर्त भाव से उन्होंने भगवान से यही पुकार की होगी, 'हे भगवान! तू इस शिशु को स्वयं ही ले ले, मेरी जान बख्श दे!' उनकी इस आर्त पुकार को भगवान ने बहुत निकट से सुना और इस संसार में प्रवेश करने से पहले ही गर्भस्थ शिशु को अपनी शरण में ले लिया!

दैवयोग से उसी समय इनकी जननी की मौसी वहाँ पहुँच गई और उनकी देखरेख में इनका जन्म सम्भव हो सका! इस संसार में इनके प्रवेश करते ही, प्रकृति का पूर्ण तूफ़ान शान्त हो गया और आकाश सूर्य की नवोदित किरणों से प्रकाशित हो गया। इनके जन्म की परिस्थिति ही मानो इनके जीवन प्रयोजन का संकेत दे गई! इनका जन्म मानो संतप्त मानवता के लिए एक शीतल बौछार है.. जिससे प्राणीमात्र अपनी जन्म जन्मान्तर की आध्यात्मिक क्षुधा को शान्त कर पायेंगे।

इनके जन्म की असहाय पीड़ा को जननी भूल नहीं पाईं.. इस कारण इस शिशु से उनका मोह का नाता जुड़ ही नहीं सका। भगवान ने इनको मोह के बंधनों से सर्वथा विमुक्त रखना था, इस कारण उस कुल में लालन पोषण तो हुआ, परन्तु मोह सों नहीं बंध सके।

इनके अतिरिक्त ज्यों ज्यों यह बड़े हुए, इनके स्वभाव की विलक्षणता भी दर्शाने लगी। यह बहुत ही निर्भय तथा स्पष्टवादी थे। बचपन से ही यह अतीव सत्य एवं न्यायप्रिय थे। 'अपने' और 'पराये' के भेदभाव से यह अनभिज्ञ थे। घर में यदि कभी किसी नौकर और इनके अपने भाई-बहिन में झगड़ा हो

जाता तो यह सदा न्याय के ही पक्षधर रहते, चाहे वह नौकर के ही पक्ष में क्यों न हो। अब इनके इस स्वभाव को घर में कोई कैसे सह पाता? यह अपनी माँ को भी समझाने की कोशिश करते कि यह तनो नाते तो कुछ पल के हैं। जन्म जन्म से अर्जित यह वैराग्यशीलता सबके सौभाग्य में तो नहीं होती, इस कारण इनके इस विलक्षण दृष्टिकोण से तनोजननी को भी अचेत में अपनी न्यूनता का आभास होता, जिस कारण वह कभी इनको क्षमा नहीं कर पाई!

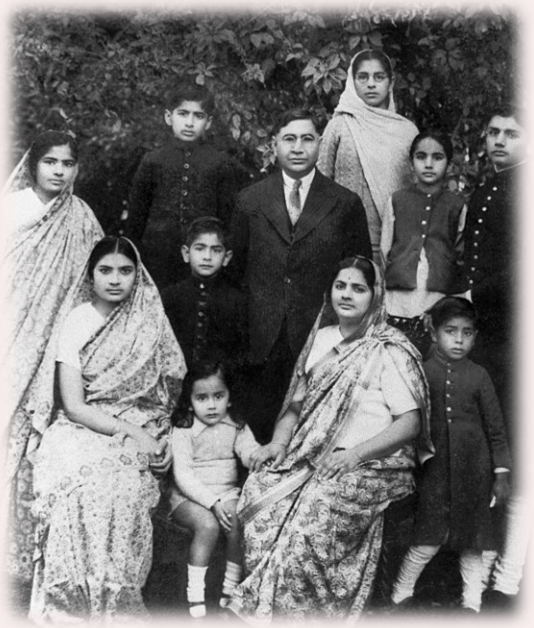

दूसरी ओर इनकी जननी बहुत पुजारी, उदार, सेवा भाव से परिपूर्ण थीं। इन गुणों के कारण उनका समाज में बहुत मान था। अपने समय की गिनी चुनी प्रशिक्षित महिलाओं में उनका नाम अग्रणी था। इसके अतिरिक्त उनकी अपनी दिनचर्या का अधिकांश समय पूजा और सेवा कार्यों में व्यतीत होता। उनको नित्य वही यज्ञ मंत्र तथा वही प्रार्थनायें गाते हुए पूज्य माँ भी देखते तो शिशु सुलभ स्वभाव से पूछ उठते, 'बीजी! आप भगवान से रोज़ एक ही बात कैसे कह सकती हैं? अगर उन्होंने एक प्रार्थना सुन ली, तो अब अगली बात करो!' अपने ही शिशु के इन वचनों में निहित गहन रहस्य को भला जननी कैसे समझ पाती? इस कारण शिशु को ही उद्दण्डी कहकर बार बार चुप करा दिया जाता। परन्तु जननी के आन्तर में इन सबके प्रतिरूप में शिशु के लिए तनिक कटु भाव का होना तो सहज स्वभाविक ही था। सो, उसमें उनका क्या दोष?

पूज्य माँ स्पष्ट विश्लेषण करके कहते हैं, 'भाई! माँ का क्या दोष? इस शिशु में ऐसा गुण ही नहीं था, जो माँ के ममतापूर्ण गुणों को प्रवाहित कर पाता!'

यह तो सब रेखा का ही खिलवाड़ हुआ! जिस प्रकार अन्य लोग इस खिलवाड़ को देख रहे हैं उसी भाँति दृष्टा भाव से पूज्य माँ भी इस खिलवाड़ को देख रहे हैं। भेद केवल इतना है कि वहाँ दोष दृष्टि का पूर्ण अभाव है.. केवल सत्य दर्शन हैं।

धन्य हैं माँ! धन्य वह विलक्षण दृष्टिकोण और धन्य हैं भगवान, जिन्होंने हमें इस अदृष्ट के दर्शन का सौभाग्य प्रदान किया-

तन जननी को दोष ना दे, रेखा ने यह खेल किया।
जन्म लग्न की बेला ही, विपरीत भाव को छेड़ दिया।।1।।

महा शुभ्र था जन्म लग्न, मोह ममता सों दूर किया।
माँ की छत्र में शिशु पला, पर संग नहीं वहाँ हो सका।।2।।

जिस माँ को तुम दुष्ट कहो, जिसने शिशु को दुष्ट कहा।
उस माँ का हृदय देख सखी, क्योंकर री वह बदल गया?3।।

माँ का कोई दोष नहीं, माँ का कोण समझाऊँ तुझे।
क्योंकर यह सब है हुआ, लो री सखी बताऊँ तुझे।।4।।

मनोविज्ञान के कोण सों, माँ मन खेल सुझाती हूँ।
किसी कोण से भी माँ को, दोषी नहीं ठहराती हूँ।।5।।

प्रथम जन्म था पुत्र जन्म, दूजा कन्या का री हुआ।
बड़ा लाड़ चाव संग प्रेम मिला, धन्य धन्य का गान हुआ।।6।।

आशा पूर्ण प्रतीक्षा में, प्रेमी जन री ठारे थे।
सौम्य लग्न था वातावरण, जब यह दोनों जन्म हुए।।7।।

मान प्रतिष्ठा माँ को मिली, धैर्य देख वा चकित हुए।
मुदित हुए, जन्म पीड़ा में भी माँ जो मुदित रहे।।8।।

माँ के लाड़ले नयनन् नूर, जन्मे प्रेम री उमड़ पड़ा।
जग बधाई मान दिया, प्रेम प्रवाह स्वाभाविक था।।9।।

महा प्रिये यह शिशु लगे, हिये सों शिशु लगा लिये।
नयनन् पलना बना करी, पलकों में री बिठा लिये।।10।।

अहोभाग्य इस शिशु के री , जन्म बेला री जब भया।
महा आँधी तूफ़ान उठा, अँधियारा री घिर आया।।11।।

घर में कोई था ही नहीं, पीड़ा ने जब आ घेरा।
पति को ही री बुला लेती, लीला हुई वह घर ना था।।12।।

भयभीत हुआ होगा तब मन, हाय क्या होने वाला है।
क्या मेरा इस बेला ही, मरण ही होने वाला है?13।।

पीड़ा ज्यों बढ़ने लगी, हृदय वेदना बढ़ने लगी।
मरण घड़ी लो आ रही, देखी माँ डरने लगी।।14।।

मृत्यु भय का दुःख सखी, तू नहीं री समझ सके।
मृत्यु जस हो सम्मुख खड़ी, वही इसे री समझ सके।।15।।

महा भयंकर आँधी को, देख के भी मन डर जाये।
आँधी संग हो तनोकष्ट, सोच तो जीव किधर जाये?16।।

सामने मृत्यु आ जाए, फिर राम को ही वह पुकारे है।
राम तुम ही अब कृपा करो, राम को तब वह निहारे हैं।।17।।

भयभीत होई सोचा होगा, हाय राम अब क्या होगा?
यह शिशु तू ही ले ले, इसमें ही रे भला होगा।।18।।

जन्म पूर्व इस शिशु को री, अनुपम ही आसीस मिली।
राखी तिलक लगा कर के, राम चरण माँ शिशु धरी।।19।।

यह मेरा नहीं यह तेरा है, माँ ने उस पल कहा होगा।
हंस के राम ने देख जरा, उसको भी अपनाया होगा।।20।।

जाने कहाँ सों माँ की री, मौसी उस पल आ गई।
उसे देख कर माँ भी री, कुछ कुछ चैना पा गई।।21।।

बहु निपुण प्रवीण वह थी, जन्म ज्ञान वह जाने थी।
किस विध क्या क्योंकर होये, इसका राज़ पहचाने थी।।22।।

जिस पल शिशु का जन्म हुआ, प्रकृति भी शान्त री हो गई।
मेघा ने निज रस छोड़ी, वायु मल वह धो गई।।23।।

महा घटा कारण सखी, अँधियारा था छा गया।
जन्म के संग ही संग सखी, उजियारा भी आ गया।।24।।

मल आवृत आकाश ने, सूर्य जो था छिपा लिया।
प्रेम वर्षा जब हुई, प्रकाश पुनः ही आ गया।।25।।

सूर्य ने रश्मि जब छोड़ी, शिशु ध्वनि उस पल उठी।
रश्मिन् के संग संग, अरी देख शिशु की आँख खुली।।26।।

ज्वरग्रसित माँ तन भया, सुध बुध अपनी खो बैठी।
जन्म बेला देख करी, माँ क्रोधित ही हो बैठी।।27।।

नाते बंधी घर आये, यह दशा देख घबरा गये।
अब क्या होने वाला है, देख करी चकरा गये।।28।।

माँ की वेदना ज्यों बढ़ी, शिशु को दूर ही जाए धरा।
दुग्ध पान निज माँ का री, उस शिशु ने नहीं करा।।29।।

शिशु ने लोरी नहीं सुनी, प्रेम सों अंग वह नहीं लगी।
माँ का प्रेम ना जाने थी, पाने को यह ना तड़पी।।30।।

जो ना जाने अरी प्रेम है क्या, प्रेम वह कबहुँ ना माँगे।
जितना अनुभव हो जाये, जीव तो उतना ही माँगे।।31।।

'माँ' किसे रे कहते हैं, यह वह जान ही ना पाई।
माँ बंधन ममता उसको, देख रे बाँध ही ना पाई।।32।।

महा सौभाग्यवान शिशु, मोह रस इसको नहीं मिला।
माँ की आँख का तारा री, यह शिशु नहीं बन सका।।33।।

पूर्ण जीवन माँ को री, यह शिशु ना भा सकी।
वास्तव में वा जन्म लग्न, कभी नहीं री भुला सकी।।34।।

जन्म बेला वा मान गया, बहु धीर है किसी ने नहीं कहा।
रोग ग्रस्त जिस माँ करी, उस शिशु को सबने दुष्ट कहा।।35।।

पूर्ण जीवन माँ ने कहा, आँख को तू ना भाये।
धूलिवत् मोरी आँख में, खटके जब जब दर्शाये।।36।।

इस कारण जब भी मिले, माँ ने कहा जो तूने सुना।
जन्म लग्न वह भूली नहीं, क्या किया है माँ ने यहाँ गुनाह?37।।

अन्तःकरण के किसी गुप्त कोण में, स्मृति बनी रही।
मृत्यु भय वा जन्म दुःख, विस्मृति ना हो सकी।।38।।

आज तुला पर माँ तोले, जिसे धूल कहा वह धूल भई।
धूल जान जो दूर करी, चरणन् में वह जाये पड़ी।।39।।

नाम का तिलक लगाये करी, राम को माँ ने जो थी दी।
धूल समझ जिसको छोड़ा, पृथ्वी रूप ही उस धरी।।40।।

पृथ्वी रूपा यह जग सारा, वह री आप ही हो गई।
व्यक्तित्व उसका नहीं रहा, वह धूल भई और खो गई।।41।।

माँ के क़दम री जहाँ पड़े, वहीं पे माँ गर देख ले।
वहीं पे जाई वा की बसे, गर ध्यान लगे तो देख ले।।42।।

ज्ञान मान जग संग लग्न, त्यजे तो देख वह पायेगी।
मोह ममता में रंगी रही, कबहुँ देख न पायेगी।।43।।

नयनन् झुकें तो देख सकें, पाँव तले वा जाई रहे।
अपने पाद् गर वह देखे, जो नित रौंदते ही रहे।।44।।

जिसको वह ना देख सके, तुला पे क्योंकर चढ़ पाये?
माँ की तुला वह आप है, माँ यह देख ही ना पाये।।45।।

वा कण सों वा तुला बनी, वा कण सों ही वा माँ भई।
माँ का मन वह आप है, माँ भी देख वह आप भई।।46।।

जो गुण जिस गुण से तोले, दोनों गुण वह आप है।
तोल तो है पर तुले नहीं, निर्गुण गुण वह आप है।।47।।

पर माँ का कोई दोष नहीं, वह तो देख ही ना पाई।
रेखा बंधी आवृत रही, मोह सों उठ ही ना पाई।।48।।

मोह ममता अरी तनोसंग, सों नयना भरमाये हैं।
इस कारण इस मोह रहित, को समझ नहीं पाये हैं।।49।।

मातृ कृपा प्रसाद रूप, उसका कोई नहीं रहा।
मातृ जाये अन्य भी हैं, मोह न उससे हो री सका।।50।।

न प्रेम मिला ना प्रेम किया, जग भेद नहीं वह जान सकी।
मोह लग्न अरे ममता सों, मातृ कृपा से दूर रही।।51।।

पुनः कहूँ अरी जान सखी, यहाँ माँ का कोई दोष नहीं।
रेखा बंधी ना देख सकी, करियो उस पे री रोष नहीं।।52।।

बिन जाने उस कृपा करी, राम कहा ही तो हुआ।
जन्म लग्न ही श्रेष्ठ था, शिशु मोह से दूर रहा।।53।।

शिशु में भी वह गुण ना था, माँ से गुण वह ले लेता।
मोह प्रेम अरी संग चाह, माँ मन को वह दे देता।।54।।

शिशु रूप में शिशु ने री, निज गुण सों जो गुण खेंचा।
माँ ने वह ही गुण जानो, उस शिशु को दे दिया।।55।।

शिशु में ऐसा गुण ना था, माँ ममता उमड़ा लेता।
यह भी गुण ना था उसमें, माँ को माँ ही बुला लेता।।56।।

उस प्रेम विभोर री होकर के, माँ को माँ सखी नहीं कहा।
इस कारण क्यों नहीं कहें, माँ का प्यार नहीं उमड़ सका।।57।।

जब जब माँ ने उसे देखा, दूर ही उससे शिशु रहा।
इस कारण री देख सखी, जो तूने सुना उसने कहा।।58।।

हर मान्यता माँ की जो, इस शिशु को ना भाई।
काहे तन सों संग करे, शिशु यह समझ ही ना पाई।।59।।

माँ का मोह यह देख करी, नित्य उसे कहती रही।
माँ यह तन नहीं तेरी, इसको कुछ पल छोड़ सही।।60।।

तन जाये भी जिससे माँ, तू री प्रेम यह करती है।
कुछ पल के तोरे साथी हैं, जहाँ भी चित्त तू धरती है।।61।।

जो माँ निज को तन समझे, तनो जाये ही अपने कहे।
सोच सोच वह माँ कैसे, ऐसे शिशु को समझ सके?62।।

माँ का कोई दोष नहीं, रेखा ने आवृत किया।
मोह ममता अरे भ्रम धुंध, वा नयना पे छा गया।।63।।

गुण में गुण वरता गये, परिणाम देखें जो हुआ।
ध्यान लगा के देख ज़रा, किस सों कहाँ पे दोष हुआ?64।।

रेखा का खिलवाड़ यह, जो तू सामने देखे है।
तुझ न्यायी वह शिशु भी री, दूर से ही री देखे हैं।।65।।

वह दोष ना दे गुण ना गाये, केवल देखे जाये हैं।
तू दुष्ट कहे तू नाम धरे, वह प्रेम में बहती जाये है।।66।।

प्रार्थना शास्त्र - 4/919
18.12.1962

परम पूज्य माँ

अर्पणा समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
अगस्त 2025

अर्पणा आश्रम

एक दिव्य आत्मा के आगमन का हर्षोल्लासपूर्वक उत्सव!

अर्पणा परिवार एवं मित्रगण, भक्त एवं जिज्ञासु, आत्मीयता से युक्त हृदय में गहन कृतज्ञता के भावों से भरपूर परम पूज्य माँ के दिव्य ज्ञान, प्रेम और अनुग्रह से परिपूर्ण जीवन से मंत्रमुग्ध हुए 25, 26, 27 अगस्त को उनका जन्मोत्सव मनाने के लिये 'आशीर्वाद' में एकत्रित हुए :

- परम पूज्य मा द्वारा **"केनोपनिषद - कर्ता 'मैं' या ब्रह्म?"** की व्याख्या पर
  नितीशा नंदा के नेतृत्व में ओडिसी नृत्य दल द्वारा भव्य मंचन प्रस्तुतीकरण

केनोपनिषद में उस दंभपूर्ण अहंकार की कहानी कही गई है जब इंद्र के नेतृत्व में देवताओं को यह एहसास होता है कि उनकी सारी शक्तियाँ और अहंकार व्यर्थ हैं एवं भगवान का संकल्प ही सर्वोच्च है।

- विनीता गुप्ता के भजन द्वारा परम पूज्य माँ को उनकी हार्दिक श्रद्धांजलि का प्रक्षेपण- *'आज तेरा है जन्म दिवस - भक्ति सुमन'*
- राम मंदिर और 'आशीर्वाद' में आरती एवं दीपमाला समारोह
- 'उर्वशी ललित कला अकादमी' द्वारा एक रोमांचक भजन संध्या
- पूज्य माँ से प्राप्त सत्संगों का ख़जाना.. जो हमें हर दिन सही राह दिखाता है

अर्पणा अस्पताल

1 अगस्त को अर्पणा अस्पताल में कुछ नये विभागों का गौरवपूर्ण उद्घाटन

- कार्डियोलॉजी और कैथ लैब
- हरित पहल परियोजना
- नई एम्बुलेंस सेवा
- नेत्र बैंक
- 6-बिस्तरों वाला एनआईसीयू
- ब्रोंकोस्कोपी वार्ड
- 5-बिस्तरों वाला क्रिटिकल केयर यूनिट
- दंत चिकित्सा विभाग

उद्घाटन समारोह में माननीय हरियाणा विधानसभा स्पीकर श्री हरविंदर कल्याण और राज्य सूचना आयुक्त श्री संजय मदान उपस्थित थे। उन्होंने इस दिन की सफलता को परम पूज्य माँ की दूरदर्शिता का ही परिणाम बताया जो अकसर कहा करते थे कि ग्रामीण समुदाय को अच्छी स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध होनी ही चाहिये। इसी उद्देश्य पूर्ति के लिये अर्पणा अस्पताल के सभी सदस्य प्रतिबद्ध एवं प्रयासरत हैं।

अर्पणा अस्पताल में 800 से भी अधिक मरीज़ों के लिए मल्टीस्पेशलिटी कैंप का आयोजन

अर्पणा अस्पताल ने 1 अगस्त को एक व्यापक, बहु-विशिष्ट चिकित्सा शिविर भी आयोजित किया जिसमें कार्डियोलॉजी, बाल रोग, त्वचा रोग, स्त्री रोग और मनोचिकित्सा में विशेष परामर्श प्रदान किया गया।

इस शिविर का उद्देश्य समुदाय को सुलभ स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना था एवं यह सुनिश्चित करना था कि मरीज़ों को इन आवश्यक विशिष्टताओं में विशेषज्ञ सलाह और उपचार मिल सके।

मरीज़ों को दवा, एक्स-रे, सीटी स्कैन और लैब परीक्षणों पर 50% की छूट दी गई।

अर्पणा ने हरियाणा की पहली फीमर रिप्लेसमेंट सर्जरी की!

करनाल के चोर कारसा गाँव के 40 वर्षीय पंकज एक ग़रीब परिवार से हैं। दुर्भाग्य से, एक दुर्घटना में उनके कूल्हे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे। दिल्ली में चार बार हिप रिप्लेसमेंट सर्जरी की गई, लेकिन संक्रमण के कारण वह अपंग हो गया और चलने में असमर्थ था।

जब संक्रमण उनके फीमर तक पहुँच गया, तो वे अर्पणा अस्पताल आये। यहाँ, अर्पणा ने हरियाणा की पहली फीमर रिप्लेसमेंट सर्जरी की। सर्जरी सफल रही। पंकज और उनका परिवार अस्पताल के इलाज और सेवाओं से बहुत प्रसन्न थे।

अर्पणा, हरियाणा में अपने अस्पताल और विकास कार्यक्रमों के लिए ऑर्बिस फाइनेंशियल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, रविंद्र बहल और हरियाणा के मुख्यमंत्री कोष से मिले सहयोग के लिए आभारी है।

हरियाणा सशक्तिकरण कार्यक्रम

गर्भाशय ग्रीवा कैंसर अभियान के अन्तर्गत, अर्पणा अस्पताल ने जुलाई 2025 में अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों के साथ मिलकर 9-15 वर्ष की आयु की लड़कियों के लिए 3 टीकाकरण शिविर आयोजित किये। अर्पणा स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर इसके प्रति जागरूकता बढ़ाई। 33 लड़कियों का चिकित्सा जाँच और अवलोकन के बाद टीकाकरण किया गया, जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवारक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है।

दिल्ली शिक्षा कार्यक्रम

छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन - विश्वविद्यालय प्रवेश और करियर प्रशिक्षण

- **दिल्ली विश्वविद्यालय:** कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET) उत्तीर्ण करने के बाद, अर्पणा के 11 छात्रों ने निम्नलिखित कॉलेजों में प्रवेश प्राप्त किया:
- **गार्गी कॉलेज** (5 छात्र)
- **लेडी श्री राम कॉलेज** (2 छात्र)
- **मैत्रेयी कॉलेज** (1 छात्र)
- **पीजीडीएवी कॉलेज** (3 छात्र)

- टेकस्टैक अकादमी: 10 छात्रों ने आईटी क्षेत्र की ओर क़दम बढ़ाये।
- **वीडियो एडिटिंग** (4 छात्र)
- **डिजिटल मार्केटिंग** (2 छात्र)
- **वेब डिज़ाइनिंग** (3 छात्र)
- **डेटा विश्लेषण** (1 छात्र)
- **मैक्स हेल्थ केयर:** 2 छात्र डायलिसिस में डिप्लोमा करेंगे।
- **'उन्नति' से रिटेल मैनेजमेंट प्रशिक्षण:** तीन छात्राएँ 'उन्नति' में 30 दिनों के रिटेल मैनेजमेंट प्रशिक्षण के लिए गईं, जिसके बाद उन्हें रिटेल क्षेत्र में प्लेसमेंट मिलेगा।

नई दिल्ली के अर्पणा सेंटर्ज़ में स्वतंत्रता दिवस समारोह

छात्रों ने देशभक्ति और उल्लास की भावना से ओतप्रोत होकर उत्साहपूर्वक नृत्य प्रस्तुत किये और देशभक्ति के गीत भी गाये!
मोलरबंद शिक्षण संस्थान: यहाँ मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा सेठ और डॉ. हर्ष भारद्वाज थे।
ज्ञान आरंभ केंद्र: देशभक्ति कार्यक्रम के बाद स्वादिष्ट भोजन परोसा गया।

अर्पणा, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन (अमेरिका), एस्सेल सोशल वेलफेयर फाउंडेशन (नई दिल्ली), एवीवा पीएलसी (यूके) के सहयोग के लिए आभारी है।

हिमाचल प्रदेश कार्यक्रम

दूरस्थ हिमाचल के गाँवों में अर्पणा के नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

दूरस्थ, अलग-थलग गाँवों में स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने के अर्पणा के मिशन को जारी रखते हुए, अर्पणा ने जून, जुलाई और अगस्त में कई चिकित्सा शिविर आयोजित किये। बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 450 से अधिक रोगियों का उपचार किया गया:

- **देओल गाँव:** 8 जून को 68 रोगी
- **कुगती गाँव:** 7 जुलाई को 153 रोगी
- **रखेड़ गाँव, चंबा:** 10 अगस्त को 160 रोगियों के लिए
- **70 अस्थिरवासी लोगों के लिये**, 11 अगस्त, 2025

को कलाबन दुधेर, डैनकुंड गुज्जर डेरा और पोहलानी माता मंदिर में मोबाइल शिविर आयोजित किये गये।

राखेड़ गाँव,
ज़िला चंबा में शिविर

इन शिविरों में निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान की गईं:

- रक्त परीक्षण
- सभी प्रकार की एलर्जी एवं दर्द आदि के लिए इंजेक्शन
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए जाँच

डॉ. श्याम कुमार मगोत्रा (एमबीबीएस, क्लिनिकल ट्रॉपिकल मेडिसिन कंसल्टेंट) और अर्पणा हेल्थ एंड डायग्नोस्टिक सेंटर, अपर बकरोटा (डलहौज़ी) की टीम के समर्पित प्रयासों से यह शिविर सफल रहे।

अर्पणा, हिमाचल के कार्यक्रमों के लिए श्री रविंदर बहल (नई दिल्ली) और बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) के सहयोग के लिए अत्यंत आभारी है।

LET'S EMPOWER VULNERABLE WOMEN AND CHILDREN AS THEY REACH FOR THEIR DREAMS!

ARPANA TRUST
EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN
- Tuition support for classes 1-12 pre-school Classes for toddlers, cultural activities.
- Vocational training classes.

DONATE ONLINE

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY
- Dramas, Publication, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/Socio economic assistance

ARPANA RESEARCH & CHARITIES TRUST
PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH
- Arpana Hospital for free /affordable health care.
- Arpana Medical centre, Himachal

DONATE ONLINE

EMPOWERING WOMEN
- Self Help Group & SHG Federations.
- Micro – Credit, Income generation, community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED
- Differently Abled Persons Organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATIONS TO ARPANA ARE 50% TAX EXEMPT UNDER SECTION 80G, INCOME TAX ACT 1961

Cheques in favour of Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust to be sent to:
Information & Resources Department
Arpana, Madhuban, Karnal- 132037, Haryana

Donations through Direct Bank Remittance:
Bank of India, Karnal (IFSC Code: BKID0006750)
Arpana Research & Charities Trust; Bank Account No. 675010100100014,
Arpana Trust Bank Account No. 675010100100001

FOREIGN DONATIONS TO ARPANA ARE 100% TAX EXEMPT WHEN SENT THROUGH:

Arpana Canada
Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton,
Ontario L6Y 359 Canada
Email: suebhanot@rogers.com

India Development & Relief Fund (IDRF)
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive,
North Bethesda, MD 20852 USA
E mail: vinod@idrf.org

Contact Us:
Harishwar Dayal, Executive Director +91 98186 00644
Email us: arct@arpana.org | at@arpana.org

Aruna Dayal, Director Development +91 99916 87310
Websites www.arpana.org www.arpanaservices.org